Inflationary Gap

Inflationary gap की धारणा का प्रतिपादन 1940 में सर्वप्रथम J. M. Keynes ने अपनी पुस्तक 'How to pay for the War' में किया था। Keynes का मत था कि अर्थव्यवस्था अगर पूर्णरोजगार के स्तर पर कार्यरत है और अर्थव्यवस्था में सम्पूर्ण मौद्रिक मांग बढ़ जाए और उत्पादन पूर्ववत रहे तो Inflationary gap का जन्म होता है। इस धारणा की विस्तृत परिभाषा उन्होंने दी

"Inflationary Gap is defined as the amount of the government expenditure against which there is no corresponding increase of real resources of man power or material by some other members of the community."

श्री Keynes के अनुसार पूर्ण रोजगार के बिन्दु पर पहुँचने से पूर्व यदि मुद्रा की मात्रा का प्रसार होता है तो उसका एक अंश तो रोजगार का विस्तार करेगा और दूसरा अंश उत्पादन-लागत में वृद्धि करके कीमत बढ़ायेगा।

परन्तु यदि पूर्ण रोजगार के बिन्दु के उपरान्त भी मुद्रा की मांग में होने वाली वृद्धि जारी रहती है और वस्तुओं एवं सेवाओं की कीमतें निरन्तर बढ़ती रहती है जबकि उत्पादन की मात्रा में वृद्धि बन्द हो जाती है।

इसी कीमत में बढ़ने वाले अन्तर को Inflationary gap कहते हैं।

जब किसी देश में मुद्रा की मात्रा बढ़ती है तब लोगों की मौद्रिक आय भी बढ़ जाती है। मौद्रिक आय के बढ़ जाने के फलस्वरूप लोगों का व्यय भी बढ़ जाता है इससे कीमतों में ऊपर बढ़ने की प्रवृत्ति उत्पन्न हो जाती है। यदि व्यय योग्य मौद्रिक आय तथा वस्तुओं और सेवाओं की पूर्ति दोनों एक ही अनुपात में बढ़ते हैं तो कीमत-स्तर में वृद्धि नहीं हो सकती। इसके विपरीत यदि वस्तुओं और सेवाओं की तुलना में यदि व्यय योग्य मौद्रिक आय अधिक अनुपात में बढ़ती है तो कीमत-स्तर अवश्य ही बढ़ेगा। यही कीमत में अन्तर 'स्फीतिक अन्तर' कहलाता है इसे निम्न चित्र से स्पष्ट कर सकते हैं

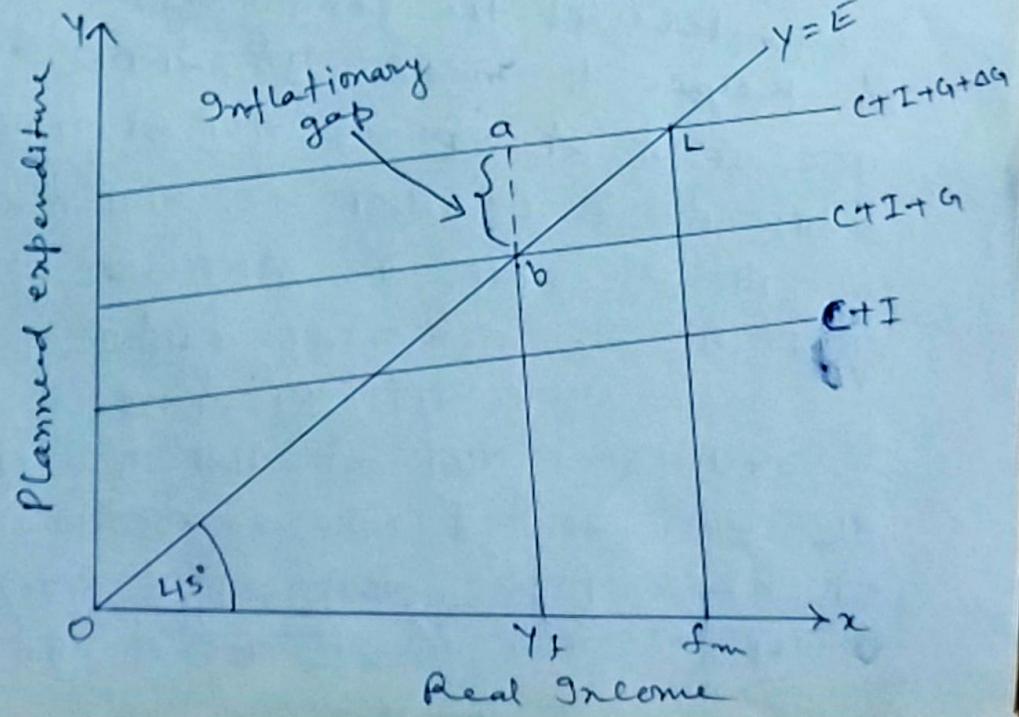

उपरोक्त चित्र में वास्तविक आय को OX तथा नियोजित व्यय को OY रेखा पर मापा गया है। 45° की OL रेखा आय तथा व्यय के बीच संतुलन को दिखाती है। C+I रेखा पर उपभोग व तथा विनियोग, C+I+G रेखा द्वारा उपभोग, निवेश तथा सरकारी व्यय और C+I+G+ΔG द्वारा उपभोग, निवेश, सरकारी व्यय एवं बढ़ी हुई सरकारी व्यय को व्यक्त करता है। आय के Y_f स्तर पर उपभोग, निवेश तथा सरकारी व्यय (C+I+G) की रेखा P बिन्दु पर पूर्ण रोजगार की स्थिति में है अतः आय एवं व्यय संतुलित अवस्था में है और G.G. की मात्रा शून्य है अब यदि सरकारी व्यय में ΔG के बराबर वृद्धि की जाती है तो सन्तुलन बनाये रखने के लिए वास्तविक आय Y_f से ~~Y~~ बढ़कर Y_m हो जाता है। यहाँ C+I+G तथा C+I+G+ΔG रेखा के अन्तर (a b) स्फीतिक अन्तर को दर्शाता है।

विभिन्न अर्थशास्त्रियों ने Inflationary gap की धारणा की आलोचना की है-

① प्रो० Hansen के अनुसार कीन्स ने स्फीतिक अन्तराल को केवल वस्तु बाजार से संबंधित किया है तथा साधन बाजार की अवहेलना की है जबकि G.G वस्तु बाजार के साथ ही साधन

बाजार में अतिरिक्त मांग के कारण उत्पन्न होता है।

(2) प्रो० कूपमेन्स के अनुसार I.G. static analysis से सम्बन्धित है जबकि inflation की स्थितियाँ प्रकृति से dynamic होती है।

(3) I.G. इस मान्यता पर आधारित है कि पूर्ण रोजगार स्तर की कीमतों में वृद्धि होती है अर्थात् अतिरिक्त मांग की कीमतों पर सीधा प्रभाव पड़ता है। जबकि कीमतें बढ़ने से लाभ की मात्रा बढ़ जाती है अर्थात् I.G. अतिरिक्त मांग स्थिति एवं लाभ स्थिति से सम्बन्धित है। अतः यहाँ भ्रम की स्थिति पैदा होती है।

(4) Inflationary gap केवल प्रवाह की धारणा से सम्बंधित है- जैसे चालू आय एवं व्यय, उपभोग एवं बचत इत्यादि किन्तु पूर्ण रोजगार स्तर पर कीमतों में होने वाली वृद्धि का प्रभाव वस्तुओं के स्टॉक पर भी पड़ता है।

Bridge up or control of Inflationary gap

Next Page Part-II में है

Sandhya Rani
Deptt of Economics